वहाबी मत का सत्य

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

सम्पादन : नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त : (6)

इतिहास में मिलता है कि जब वर्षा होने लगी तो लोग अपने हाथ उनके शरीर से स्पर्ष करके अपने चेहरे पर फेरने लगे और कहते थे मुबारक हो आपको ए हरमैन (दो पुण्य स्थान/मक्का और मदीना) को पानी से अधाने वाले। क्योंकि जनाबे अब्बास इस्लाम आने के भी पहले से और इस्लाम आने के बाद भी साक़ी उल हजीज (हाजियों को पानी पिलाने वाले) थे अर्थात मक्के के हाजियों को पानी पिलाने की प्रबन्ध आपकी ज़िम्मेदारी थी। इसी प्रकार खुदा के हरम (पुण्य स्थल, व मक्का मुअज़्ज़मा) के लोगों को पानी पिलाना उनका काम था और आज वह इस वर्षा द्वारा रसूल के हरम अर्थात् मदीने के वासियों को भी पानी पिलाने वाले हो गए इस वजह से लोग उन्हें "साक़ी उलहरमैन" कह रहे थे। मगर किसी ने उन लोगों का मुँह बन्द नहीं किया कि यह षिर्क !! इसको इब्ने असीर जज़री ने 'उसदुलग़ाबा' में लिखा है और इस बारे में हस्सान बिन साबित ने षेर कहे जिनमें है कि "लागों ने सूखे की कठिनाई में प्रष्न (याचन) किया तो अब्बास के मुख के माध्यम से बादल ने वर्षा से प्यास बुझायी।" इस शेर में तवस्सुल भी है और पानी के अधाने का सम्बन्ध अल्लाह की ओर नहीं है बल्कि बादल की ओर है जो कि वहाबियों के निकट कुफ़्र है।

(फिर कहा है) "इनकी वजह से अल्लाह ने इस नगर को जीवित कर दिया और चारों ओर हरियाली दिखाई देने लगी। एक रिवायत में जनाब ईब्ने अब्बास की ज़बानी है कि हज़रत उमर ने कहा– "पालनहार! हम तुझसे अपने पैग़म्बर के चचा का वास्ता देकर वर्षा मांगते हैं और उनकी सफ़ेद दाढ़ी सिफ़रिष के लिए लाए हैं।" इसके बाद वर्षा हुई।

10. रसूल[स] की क़ब्र पर जाकर रसूल[स] से फ़रयाद/गुहार 'इसतीआब' इब्ने अब्दुलबर में है कि उमर के समय में एक बार जो सूखा पड़ा तो मुसलमानों में से एक व्यक्ति, बैहक़ी ने लिखा है कि वह रसूल[स] के सहाबियों में से बिलाल बिन हारिस थे, रसूल[स] की क़ब्र पर आए और कहा या रसूलल्लाह! अपनी उम्मत के लिए वर्षा के लिए प्रार्थना कीजिए कि इनका विनाष हो रहा है। इस पर किसी ने एतराज़ नहीं किया।

11. नाबेग़ा जअदी की रसूल[स] की क़ब्र से फ़रयाद–

तृतीय ख़लीफ़ा उस्मान के समय में राज्य के गर्वनर ने जअदी के साथ कठोरता से काम लिया तो नाबिग़ा ने कुछ शेर रचे जिनमें यह कहा है किः "ऐ पैग़म्बर और उनके दोनों साथियों की क़ब्र हम आपसे फ़रयाद कर रहे हैं। यह नाबिग़ा हज़रत[स] के बहुत बड़े सहाबी हैं।"

12. अब्दुल्लाह बिन उमर की रसूल अल्लाह[स] से फ़रयाद–

शफ़ा द्वारा काज़ी अय्याज़ में है कि अब्दुल्लाह बिन उमर के पैर में एक बार बहुत दर्द हुआ। किसी ने कहा कि जो सबसे अधिक प्रिय हो उसे पुकारिए। उन्होंने कहा "वामुहम्मदाहु" (हे मुहम्मद) बस यह कहते ही उनके पैर का दर्द समाप्त हो गया।

13. उस्मान बिन हुनैफ़ की तवस्सुल के बारे में निर्देश–

बैहक़ी ने और अबू नईम ने किताब–उल–मारिफ़ा में लिखा है। सुहैल बिन हुनैफ़ का बयान है कि एक व्यक्ति तृतीय ख़लीफ़ा के पास किसी काम से जाता था मगर वह उसकी तरफ़ ध्यान नहीं

करते थे। उसने उस्मान बिन हुनैफ़ से इसका वर्णन किया। उन्होंने कहा जाकर वुज़ू करो। फिर मस्जिद में जाकर दो रकत नमाज़ पढ़ो। फिर कहो, 'पालनहार'! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ और तेरी ओर ध्यान करता हूँ 'तेरे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[स] कृपालु नबी के द्वारा' या मुहम्मद! मैं आपके द्वारा अपने प्रभु की ओर ध्यान करता हूँ कि मेरी यह कामना पूर्ण हो। इसके बाद अपनी कामना बताना अतः उसने ऐसा किया और फिर जनाब उस्मान बिन अफ़्फ़ान के द्वार पर गया तो द्वारपाल आया और उसे उस्मान के पास ले गया। उन्होंने उसको आदरपूर्वक बिठाया और कहा– बताओ तुम्हारी क्या ज़रूरत है? और उस ज़रूरत को पूरा किया।

14. पैग़म्बर[स] के द्वारा स्वास्थ्य की दुआ मांगना–

सहीह मुस्लिम में अस्मा बिन्ते अबिबक्र से रवायत है कि उन्होंने पैग़म्बर[स] का कुर्ता निकाल कर दिखाया और कहा यह आइषा के पास था और हज़रत[स] इसे पहनते थे। अब हम इसे धोकर बीमारों को पानी पिलाते हैं और इसके द्वारा स्वस्थ होते हैं। इसे वहाबी जत्थे के सरदार इब्ने क़य्युम ने भी अपनी किताब "ज़ादुलमआद" में लिखा है।

15. अब्दुलाह बिन जुबैर का तवस्सुल–

इब्ने ख़ल्लिकान ने अपनी तारीख में शिअ़बी की रिवायत लिखी है कि मैंने एक अजीब बात देखी। हम लोग पवित्र काबे के आंगन में थे। मैं और अब्दुल्लाह बिन उमर और इब्ने जुबैर और मुस्अ़ब बिन जुबैर और अब्दुल मलिक बिन मरवान। नमाज़ के बाद सब लोगों ने कहा कि एक व्यक्ति हममें से उठे और रूकने यमानी की ओर जाए और उसे पकड़ के अल्लाह से प्रार्थना करे तो वह ज़रूर पूरी होगी और फिर सबने कहा तुम अब्दुल्लाह बिन जुबैर उठो कि तुम हिजरत के बाद सबसे पहले माँ के पेट से जन्मे व्यक्ति हो। इस पर वह उठे और रूकने यमानी को पकड़ कर कहाः–

"पालनहार! तू बड़ा है हर बड़ी से बड़ी बात के लिए तुझ ही से आषा बान्धी जा सकती है। मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ तेरे अर्ष की इज़्ज़त (महिमा/प्रभुत्व) के द्वारा तेरे चेहरे की इज़्ज़त के द्वारा और तेरे पैग़म्बर की इज़्ज़त के द्वारा कि तू मुझे दुनिया से ना उठाना यहाँ तक कि मैं हिजाज़ का हाकिम हूँ और मुझे ख़लीफ़ा कह कर सलाम किया जाए।

इन तवस्सुल के सबूतों में से कुछ तो हज़रत[स] की वफ़ात (देहान्त) के बाद के हैं इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि जीवन में हज़रत[स] के द्वारा दुआ में कोई बुराई नहीं है वफ़ात के बाद यह नहीं होना चाहिए। इसके अलावा एक तो सिद्धान्तया जो चीज़ षिर्क में हो उसमें किसी के जीवन व मृत्यु का अन्तर कोई अर्थ नहीं रहता और फिर यह रसूल[स] की मृत्यु वास्तव में वैसी मृत्यु नहीं है जो साधारण लोगों की होती है बल्कि आप[स] इस मृत्यु के बाद भी वास्तव में सुनते और जवाब देते हैं। इसके विस्तार का यह समय नहीं है मगर संक्षेप में इतना कहना है कि शहीदों का जीवन कुरान मजीद की आयतों से साबित है। और पैग़म्बरे खुदा[स] का स्थान अल्लाह के सामने वास्तव में दूसरे शहीदों से बहुत ऊँचा है। और अबू दर्दा की रिवायत है कि रसूलल्लाह[स] ने फ़रमाया कि शुक्रवार को मुझ पर बहुत सलवात भेजा करो कि इस दिन फ़रिष्ते आते हैं और कोई व्यक्ति मुझ पर सलवात नहीं भेजेगा मगर यह कि वह उसकी सलवात मेरे सामने आएगी। रावी (रिवायत करने वाला/बात दोहराने वाला) कहता है मैंने कहा कि आपकी मृत्यु के बाद भी? कहा मेरी मृत्यु के बाद भी। वास्तव में अल्लाह ने धरती पर हराम (निशिद्ध) किया है कि वह पैग़म्बरों के शरीर को खाए और पैग़म्बर जीवित रहता है उसे रिज़्क़ (आजीविका) मिलता है। हाफ़िज़ इब्ने माजा ने अपनी सुनन (हदीसों का संक़लन) में इसकी रिवायत की है और इसी तरह की बहुत सी हदीसें हैं जो 'ख़साइस उल, कुबरा सुयूती' में और 'दलाइलिन्नुबूवा' हाफ़िज़ अबू नईम इसफ़हानी में आई हैं। और मुहद्दिस सिनदी ने अपने हाषिए में जो सुनने ईब्ने माजा पर है इस हदीस की शरह में लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं

(नोटः विश्वास से रसूलस0 मरे नहीं, न ही उनका देहान्त हुआ। उनकी देह भी बाक़ी है।)

होना चाहिए। इसलिए कि यह आयत शहीदों के बारे में तो कुरान मजीद में आई है तो फिर पैग़म्बरों का क्या कहना? और नबियों के विशिष्ट जीवन के बारे में भी कुछ हदीसें हैं उनमें से यह है कि आप[स०] ने जनाब मूसा[स०] को देखा कि वह अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं। अब जबकि रसूल[स०] का जीवित होना साबित हो गया तो आपके जीवन में तवस्सुल की जो हदीसों हैं वह सब इस समय भी तवस्सुल के सही होने का सबूत हैं।

क़सतलानी ने 'मवाहिबे लदुन्निया' में लिखा है कि हज़रत[स] के जीवन में और उसके बाद तवस्सुल के सबूत अधिक हैं कि उनको घेरा नहीं जा सकता। हदीस के विद्वान हज़रत[स] की क़ब्रे पाक पर जाकर दुआ को बुरा नहीं समझते थे अतः अल्लामा शम्सुद्दीन जज़री ने बहुत अच्छे शब्दों में लिखा है कि "अगर पैग़म्बर[स] की पाक क़ब्र पर दुआ क़बूल न हो तो और कहाँ क़बूल होगी?"

और शाह अब्दुल हक़ देहलवी ने अपनी किताब "जज़्बुलकुलूब" में लिखा है कि मक़सद के पाने में अजीब अजीब फ़ायदे उठाने में जो बातें हज़रत[स] की क़ब्रे पाक पर फ़रयाद से मुहताजों और ग़रीबों के सामने आए हैं, बहुत हैं। काज़ी अयाज़ ने षिफ़ा में इमाम मालिक का विवाद ख़लीफ़ा अब्बासी अबू जाफ़र मनसूर दवानक़ी के साथ लिखा है कि ख़लीफ़ा ने उनसे पूछा कि मैं काबे की ओर मुहँ करके खड़ा हूँ या मुबारक (शुभ) चेहरों की ओर मुहँ करके खड़ा हूँ? इमाम मालिक ने कहा कि आप हज़रत[स] की ओर से मुहँ क्यों कर मोड़िएगा जबकि वह आपके भी वसीले हैं अल्लाह की ओर से और आपके पिता अबुलबषर (मानव–पिता) हज़रत आदम के भी।

हमारे समय के बड़े आलिम सय्यद इब्राहीम रावी रफ़ाइ ने "औराक़े बग़दादिया" में रबली की बात दोहराई। और उन्होंने ज़ियारत के तरीक़े में लिखा है कि फ़िर पाक क़ब्र के निकट आए और हज़रत के पवित्र मस्तक (सिर) की ओर मुख और क़िबले की ओर पीठ किये हुए और लगभग चार हाथ की दूरी पर खड़ा हो ओर उसके नीचे के हिस्से की ओर दृष्टि रखे और सलाम करे क्योंकि हदीस है कि जो मुझे सलाम करेगा मैं उसका जवाब दूंगा। और सलाम में आवाज़ ऊँची न करें जिस प्रकार हज़रत के जीवन में हुक्म था। अन्त में हज़रत के पवित्र मुख की ओर आकर हज़रत से तवस्सुल करें और आप[स] से अल्लाह के यहाँ षिफ़ाअत (सिफ़ारिश) की उम्मीद रखें।"

पिछले सबूतों में से बहुत से यह पता चलता है कि हज़रत[स] की तरफ सम्बन्ध वाली हर चीज़ से बरकत लेना सहाबी व ताबईन और पहले के नेक लोग में माना हुआ रहा है। अब्दुल्लाह बिन उमर के लिए कहा जाता है कि वह पैग़म्बर[स] के चिन्हों की खोज में फिरते थे और जहाँ हज़रत ने नमाज़ पढ़ी चाहे जीवन में एक बार ही, वहाँ जाकर नमाज़ पढ़ते थे उन्हीं स्थानों पर बाद में मस्जिदों का निर्माण हुआ। उसका विवरण समहूदी ने "वफ़ा" में किया है।

इब्ने क़य्यूम ने अपनी किताब "ज़ादुलमआ़द" में जनाब इस्माईल व हाजरा के बारे में निश्चित लिखा है कि "इब्राहीम और उनके पुत्र इस्माईल का वतन (मूल देश) से दूर होना और अकेले पन तथा बलिदान (कुर्बानी) के लिए तैयार होना इन सब का नतीजा था कि उनके चिन्ह और उनके पाँव के निषान इबादत का स्थान बन गये मोमिन के लिए और हज के संस्कारों (तरीक़ों) में आ गए क़यामत तक के लिए।" जब जनाबे इस्माईल व हाजरा के चिन्ह इस कारण कि उन्होंने प्रभु के मार्ग पर चलते हुए कठिनाइयाँ उठायीं इस लायक हुए कि वह इबादत का स्थान बन जाएं, तो जो सब नबियों में सबसे श्रेष्ठ हो जिसका कहना हो कि किसी नबी को उतनी कठिनाइयाँ नहीं पहुँचीं जितनी मुझे पहुँची है, आप[स] के चिन्ह क्या इस लायक़ नहीं होंगे कि उनका आदर सत्कार किया जाए? और यह विधान (सामान्य सूत्र) है कि जब कोई वस्तु किसी आदरणीय व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है तो वह भी आदरणीय हो जाती है। अतः सुयूती ने खसाइसुल कुबरा में मेराज के हाल में पैग़म्बर[स] की ज़बानी लिखा है कि

"मैं चला और मेरे साथ जिब्रईल थे। एक स्थान पर पहुँच कर उन्होंने कहा कि सवारी से उतर आइए और इस स्थान पर नमाज़ पढ़िये। मैंने ऐसा किया तो उन्होंने पूछा आप जानते हैं? आपने कहाँ पर नमाज़ पढ़ी? यह तैबा है जहाँ आप हिजरत (यात्रा/पवित्र स्थान) करके जाएँगे। इसके बाद मैं चला तो फिर उन्होंने कहा उतर आइए। यहाँ नमाज़ पढ़िये। यह तूरे सीना (एक पहाड़ी) है जहाँ अल्लाह ने मूसा[अ] से बात की थी फिर मैं चला और उन्होंने कहा उतरिये यहाँ नमाज़ पढ़िये यह बैयतुल लहम है जहाँ ईसा[अ] का जन्म हुआ था।"

अब हर सच्चे अन्तःकरण वाला फ़ैसला कर सकता है कि ईसा[अ] का जन्म स्थान इस लायक हो कि वहाँ नमाज़ पढ़ी जाए तो क्या हज़रत ख़ातेमुल अम्बिया (आखिरी नबी) सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम का वह भवन जहाँ आप[स] का जन्म हुआ वह इस लायक हो कि उसे तोड़ कर ध्वस्त कर दिया जाए जैसा कि वहाबियों ने किया?

इसके अलावा हज़रत[स0] के आदर व हज़रत से जुड़ी हुई हर वस्तु का आदर और उन्हें शुभ/बरकत वाला समझना, इसके बहुत से सबूत सहाबियों के चलन और पहले के नेक लोगों में मिलते हैं।

अबू अम्र शैबानी की रिवायत है कि मैं एक वर्ष तक इब्ने मसऊद के साथ उठता बैठता रहा जिस समय वह 'क़ाला रसूलल्लाह कहते थे' उनके शरीर में थर थरी सी पड़ जाती थी।

शैख बद्रूद्दीन बिन इब्राहीम बिन सअ्द उल्लाह बिन जमाअ कनानी (मृत्यु 733 हिजरी) की किताब "तज़किरतुस्सामे वल मुतकल्लिम" (प्रकाषन दाएरातुल मआरिफ़ हैदराबाद 1353 हिजरी) में है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ के सामने जब हज़रत[स] का ज़िक्र होता तो आपका चेहरा पीला पड़ जाता था।

इसी किताब में इमाम मालिक के लिए लिखा हैं कि जब उनके सामने पैग़म्बर[स] का ज़िक्र होता था तो उनके चेहरे का रंग बदल जाता था और वह झुक जाते थे। अब्दुल करीम समआनी की किताब "अदब उल अमलाअ वसतमलाअ" (यही प्रकाषन 1953) में यह्या बिन बुकैर से रिवायत है जब मालिक मुअत्ता (पैग़म्बर[स] की हदीसों की किताब) की हदीसों का पढ़ पढ़कर मुक़ाबला करते थे तो पूरे वस्त्र अमामे (पगड़ी) के साथ धारण करते थे और सिर झुकाए रहते थे और जब तक उन हदीसों को लिख नहीं लेते थे सर को खुजाते भी नहीं थे, न ही नाक छिनकते थे। यह हालत उनकी नबी[स0] की हदीस के आदर सत्कार में होती थी।

इसी किताब में मुईन बिन ईसा वर्राक़ का बयान है कि मालिक जब हदीसें बयान करने बैठते तो पहले स्नान करते और ख़ुषबू लगाते थे सुनने वालों में से कोई आवाज़ ऊँची करता तो नाराज़ हो जाते और कहते थे कि अल्लाह ने कहा है कि पैग़म्बर[स] की आवाज़ से अपनी आवाज़ ऊँची न करो। आज कोई रसूलल्लाह[स0] की हदीस पढ़ते समय ऊँची आवाज़ करे तो वह ऐसा ही होगा कि जैसे उसने हज़रत की आवाज़ पर आवाज़ ऊँची की।

दूसरे लोगों के अलावा नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ क़न्नोजी ने भी लिखा है कि
"इमाम मालिक मदीने में पैदल चलते थे कि कभी उनके शरीर से मिट्टी का कोई वह कण छू जाए जिस पर हज़रत[स] रास्ता चलते हों और हज़रत के आदर में वहाँ सवार होकर नहीं चलते थे और कहते थे कि मुझे लज़्जा (षर्म) आती है कि मैं सवारी पर चलूँ उस मिट्टी पर जहाँ हज़रत[स] दफ़्न हैं।"

आदर का एक तरीक़ा चूमना भी है जिसके ख़िलाफ वहाबी लोग बहुत सख़्ती करते है। मगर इसके लिए हज़रत[स] ने चुप रहकर इसे पसन्द (अनुमोदन का चुप) ही नहीं किया बल्कि इसकी साफ़ आज्ञा भी दी, आपके बाद पहले के नेक लोगों का चलन भी रहा है अतः "अदबुल अमलाअ वस्तम्लाअ" में अब्दुर्रहमान बिन कअ्ब बिन मालिक की रिवायत है अपने पिता से कि मैं हज़रत[स] के पास गया तो हज़रत[स] के हाथों और दोनों घुटनों **(बक़िया पेज 14 पर..................................)**

विज्ञान की ही एक शाखा मानोविज्ञान (नफ़सीयात-Psychology) भी है। इस मनोविज्ञान ने इन्सान को बहुत कुछ बताया, बहुत कुछ सिखया है। इसके कई शुअ्बे हैं, कई सम्भाग हैं। जिनमें से एक के द्वारा इन्सान के दिमाग़ को प्रभावित करने के नये-नये तरीक़े ईजाद हुए हैं। आज वही तरीक़े अपना के वह बातें जो बच्चों को महीनों में सिखाई जाती थी वह घण्टों और मिनटों में सिखा दी जाती हैं यह विशुद्ध मनोविज्ञानिक कीर्ति है, ख़ालिस नफ़सीयाती कारनामा है मगर स्वार्थी, लोभी, धन-दौलत के पुजारी, सत्तापूजक और कामलोलुप, अपने लोभ-लालच की संतुष्टि के लिये, धन बटोरने के लिये, शासन करने या उसे बनाये रखने के लिये, प्रोपोगण्डो, प्रचार-प्रसार में इसी मनोविज्ञान से काम लेके दुनिया को तबाही के गड्ढे में ढकेल रहे हैं। पहली सूरत मनोविज्ञान के ठीक दिशा में सफ़र करने की है। दूसरी ग़लत दिशा में सफ़र करने की।

आज के दौर में जिस तरह नित्यदिन कोई न कोई नई ईजाद सामने आती है, उसी तरह नित्यदिन एक नये विचार, एक नये फ़ैशन, एक नयी विचारधारा से सन्मुख होना पड़ता है, भौतिक ईजाद को या नवचेतना या आधुनिक दृष्टिपूर्ण, इसके स्वीकारने बल्कि फैलाने या रद्द करने बल्कि मिटाने के सिलसिले में वही सिद्धान्त काम करता रहेगा। शुद्ध ज्ञान-विज्ञान हो तो स्वीकार करले और फैलायें और लालच काम लोलुप्ता, सरकार परस्ती, धन पूजा की मिलावट दिखायी दे तो रद्द कर दें बल्कि उसे मिटाने का प्रयत्न करें और विचार और दृष्टि के बारे में हमको बहुत अधिक होशयारी की ज़रूरत है। क्योंकि ग़लत विचारधारा की काट ''एटमबम'' से कहीं अधिक हुआ करती है। इसके लिये बहुत अन्तरात्मा के प्रकाश, पैनी दृष्टि और धौंस से मुक्त मानस की आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब हम ''दीन'' को ठीक पहिचानने वाले बनें, उसकी आत्मा में उतर जायें और साथ ही साथ समय के हाल-चाल और रुख़ का ठीकम-ठीक अन्दाज़ा किये रहें।



(बक़िया पेज 6 का..................................)
को चूम लिया और शैख मुह्युद्दीन इब्ने अरबी की किताब "महाज़रतुल अबरार" में इब्ने यज़ीद की रिवायत है अपने पिता से कि एक आराबी (अरब का बपवासी) रसूल[स] के पास आया और एक चमत्कार की मांग की। उस चमत्कार को देखने के बाद कहा या रसूलल्लाह[स०] मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपके हाथ और पाँव को चूम लूँ। आपने[स] उसे आज्ञा दे दी। फिर उसने कहा अब मुझे आज्ञा दीजिए कि आपको सजदा करूँ आपने कहा नहीं। किसी को किसी का सजदा नहीं करना चाहिए। या तो प्यार के कारण चूमा जाता है या आदर के कारण किसी भी प्रकार इसको षिर्क कहना या निशिद्ध कहना दोनों ग़लत हैं। **जारी..............................**

मदहे इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०]

हस्सानुल हिन्द मौलाना सैय्यद कामिल हुसैन नक़वी 'कामिल' जायसी

अव्वलो अवसतो आख़िर है मुहम्मद तुम में
अल्लाह अल्लाह ये कसरत भी है वहदत के सिवा
भर दिया दामने साएल को सिवा दामन से
और ज़ाहिर न किया अपनी निदामत के सिवा
बात इन्साफ़ की ये है कि पसे क़त्ले हुसैन
कौन यूँ सामने आता तेरी हिम्मत के सिवा
दस्ते नक़्क़ाशे अजल खैंच के तेरी तस्वीर
जैसे सब भूल गया हो तेरी सूरत के सिवा
ये हक़ीक़त नहीं है अन्दाज़े तलब है मौला
ईल्म हर शै का तुम्हें है मेरी हालत के सिवा
वाह ऐ सय्यदे सज्जाद के दामाने करम
आसमाँ तंग न होता तेरी वुस्अत के सिवा
संगे अस्वद को गवाही पे ज़बाँ मिलती है
वो भी होता है जो कहलाता है क़िस्मत के सिवा

